छोटे बाबाजी की कहानी
हेलेन बैनरमैन

छोटे बाबाजी की कहानी

बहुत पुरानी बात है. एक छोटा लड़का था
और उसका नाम था - छोटे बाबाजी.
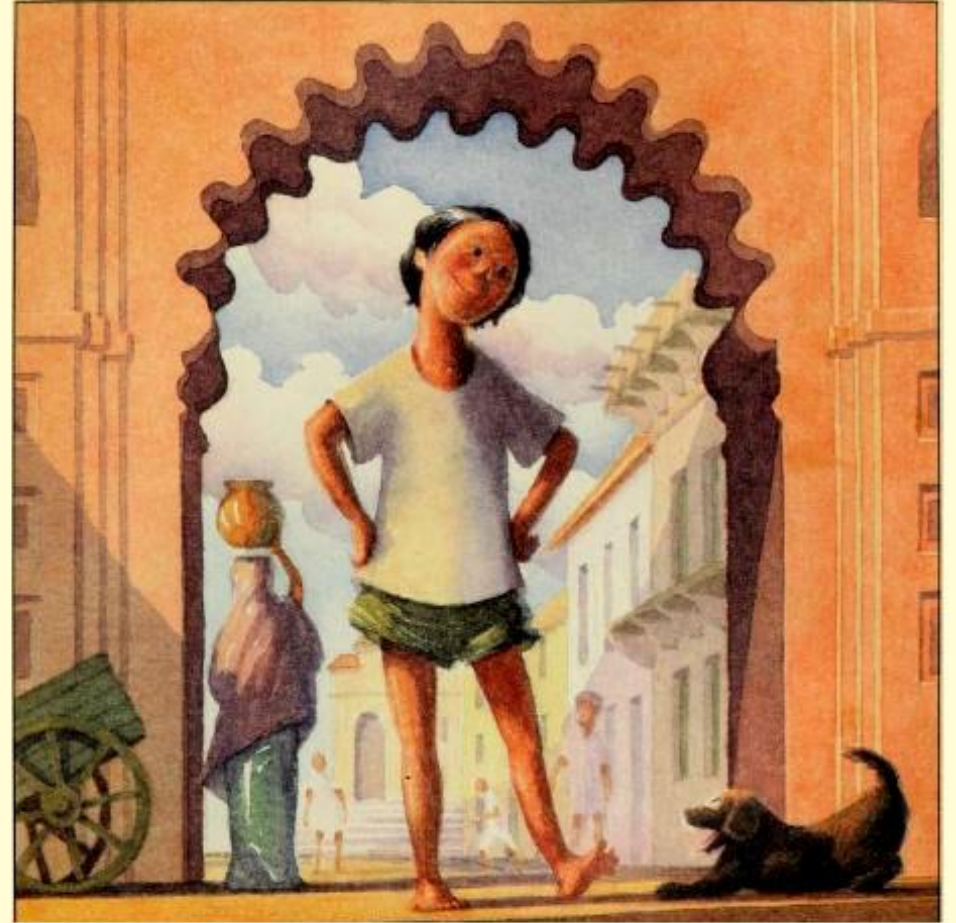
उसकी माँ का नाम था - मामाजी.

और उसके पिताजी का नाम था - पापाजी.
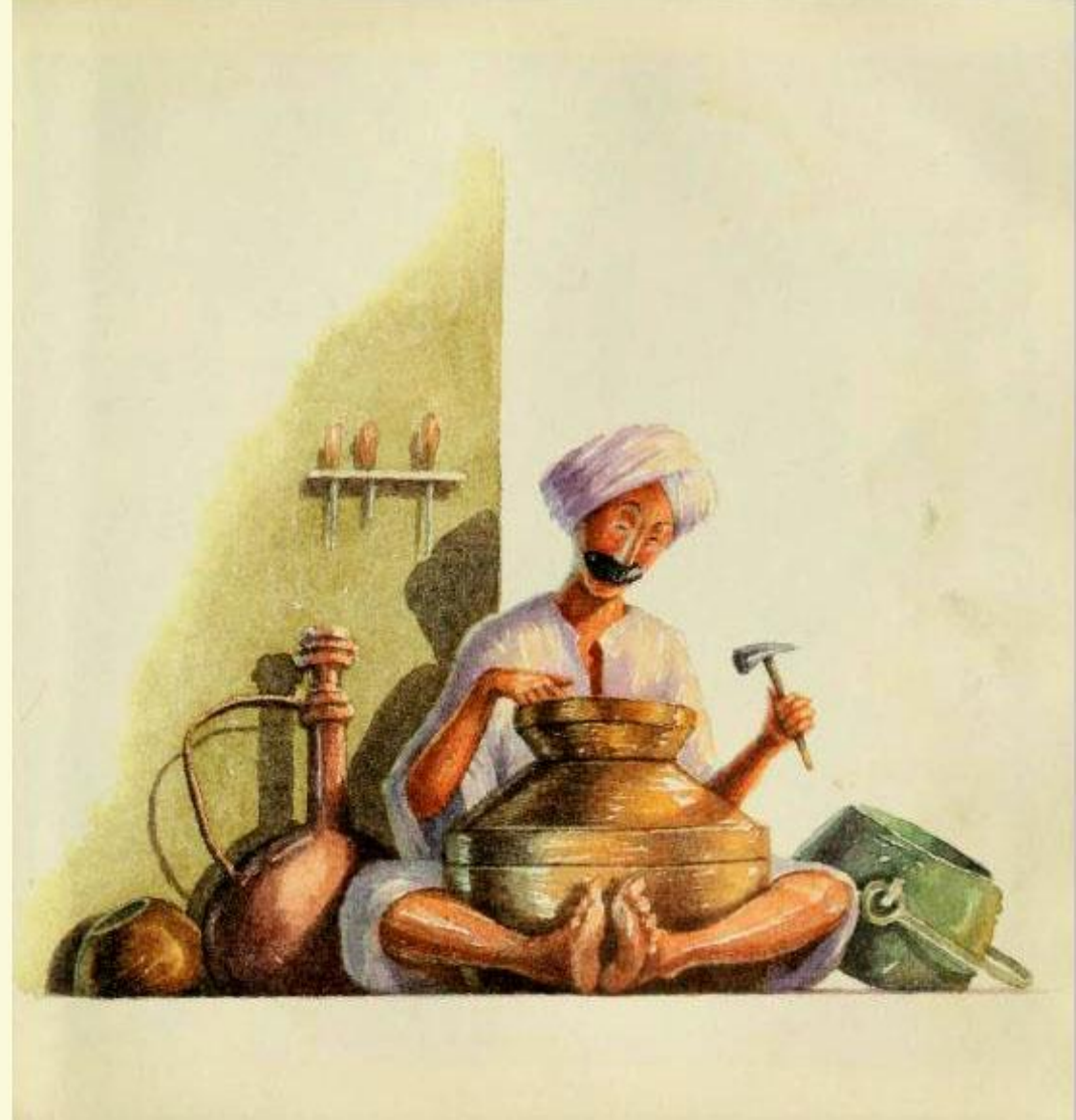
मामाजी ने उसके लिए एक सुंदर लाल कोट और
एक सुंदर छोटा नीला पायजामा बनाया.
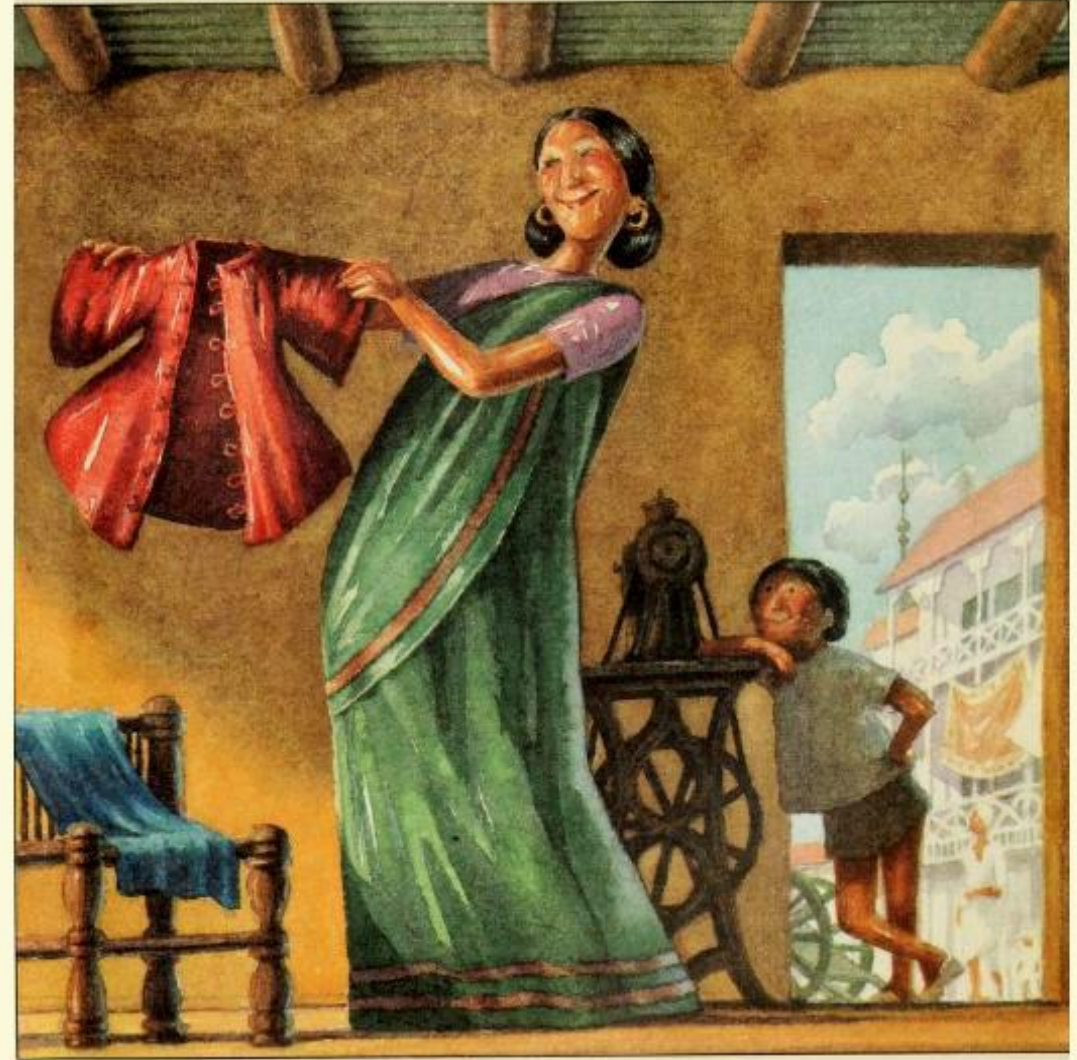
और फिर पापाजी बाजार गए, और उसके लिए एक सुंदर हरा छाता, और एक सुन्दर अस्तर वाले बैंगनी जूते खरीद कर लाये.

उन सब को पहनकर छोटे

बाबाजी क्या जंच रहे थे!

इसलिए वो अपने सारे बढ़िया कपड़े
पहनकर जंगल में टहलने निकल पड़े.
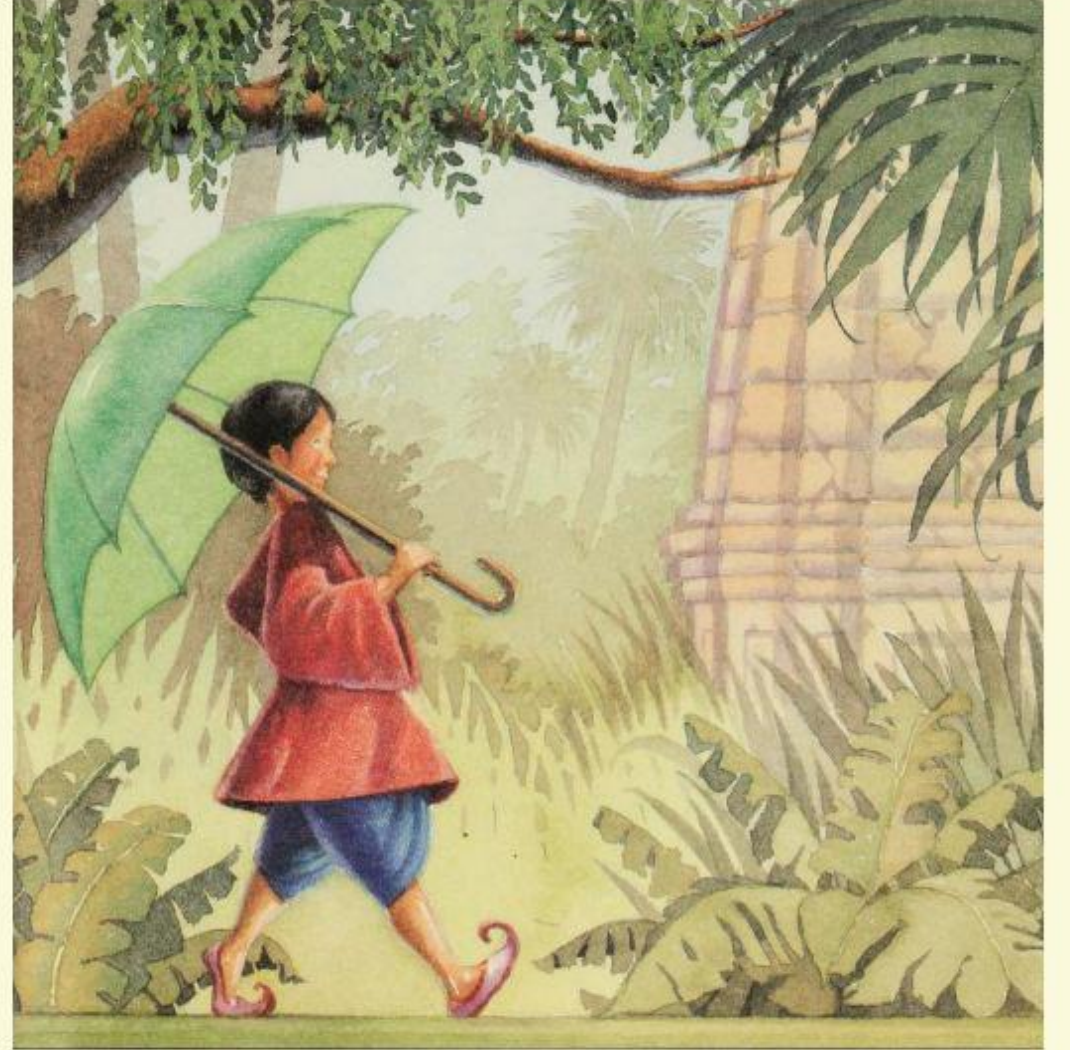
कुछ देर बाद जंगल में उन्हें एक चीता मिला.

चीते ने उनसे कहा, "छोटे बाबाजी, मैं तुम्हें खाने जा रहा हूँ!"
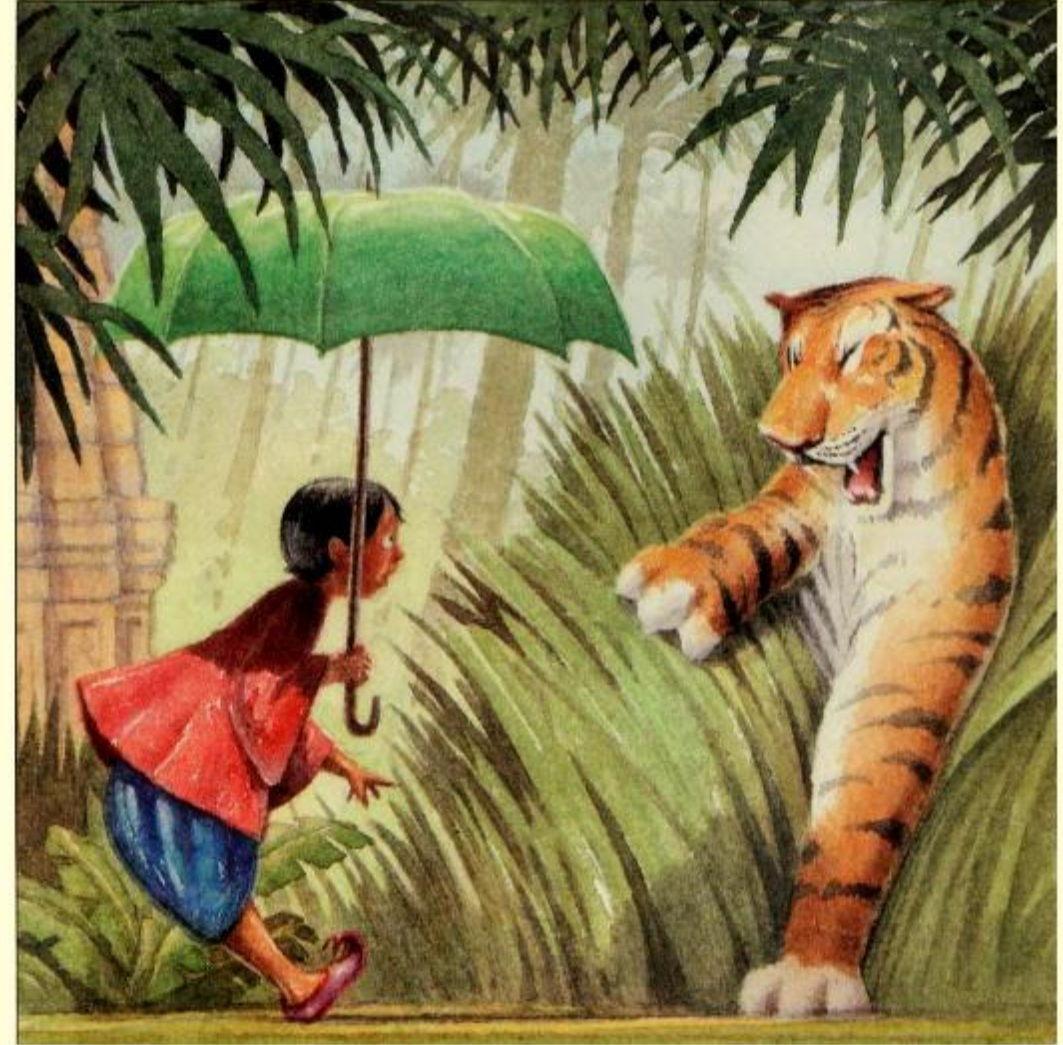
छोटे बाबाजी ने जवाब दिया, "अरे! मिस्टर चीते, कृपया मुझे मत खाओ, मैं बदले में तुम्हें अपना खूबसूरत छोटी लाल कोट दे दूंगा." यह सुनकर चीते ने कहा, "बहुत अच्छा, मैं इस बार तुम्हें नहीं खाऊंगा, लेकिन तुम्हें मुझे अपना सुंदर छोटा लाल कोट ज़रूर देना होगा."

फिर चीते ने छोटे बाबाजी का सुन्दर लाल कोट पहना और जाते हुए उसने कहा, "अब मैं जंगल में सबसे सुन्दर लगने वाला चीता हूँ!"

छोटे बाबाजी कुछ और आगे चले, और तब उन्हें एक अन्य चीता मिला, और उसने उनसे कहा, "छोटे बाबाजी, मैं तुम्हें खाने जा रहा हूं!" तब छोटे बाबाजी ने कहा, "अरे! मिस्टर चीते, कृपया मुझे मत खाओ. मैं तुम्हें अपनी खूबसूरत छोटी नीली पैंट दे दूंगा." तो टाइगर ने कहा, "यह बहुत अच्छी बात है. मैं इस बार तुम्हें नहीं खाऊंगा, लेकिन तुम्हें अपनी सुन्दर नीली पैंट मुझे ज़रूर देनी होगी."
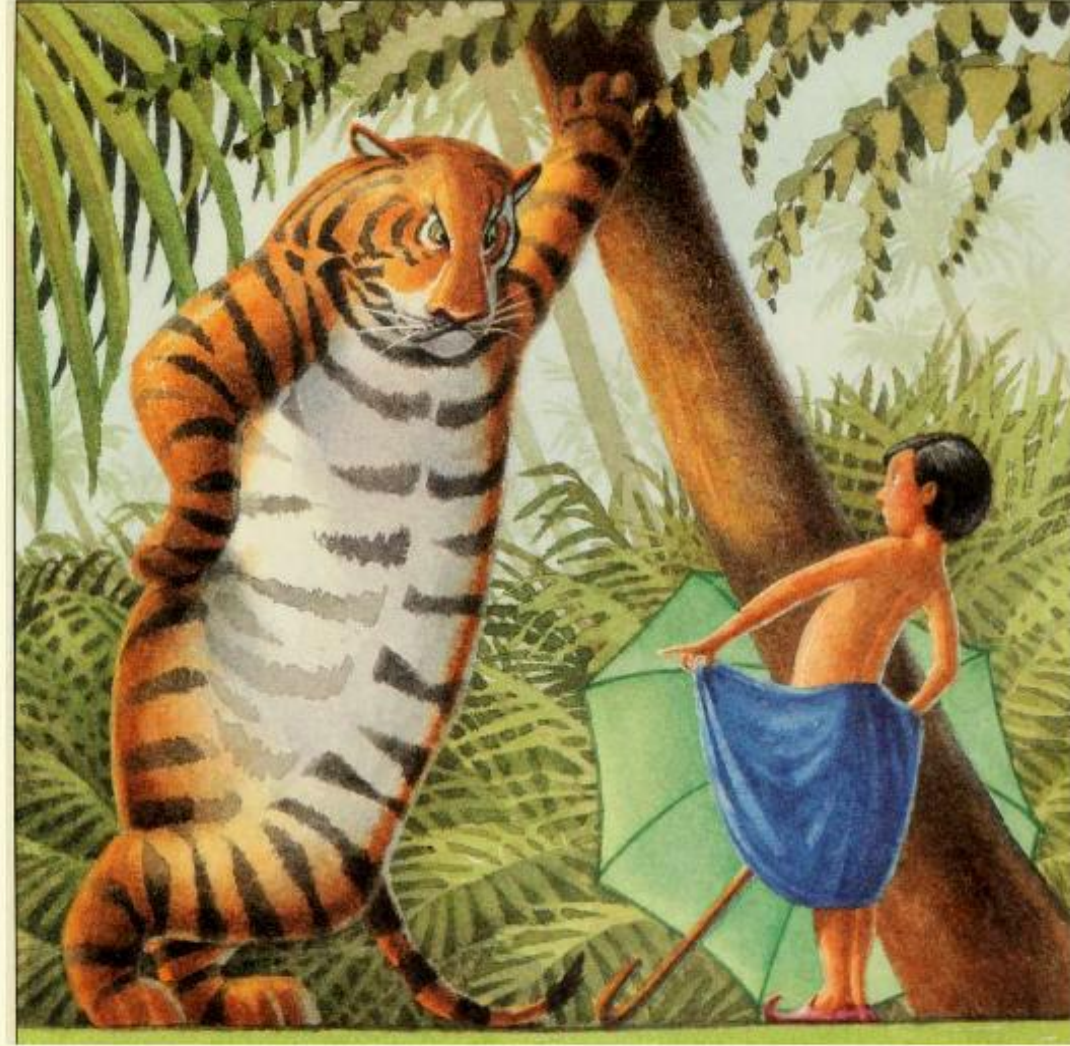
फिर चीते को बाबाजी की सुंदर छोटे नीली पैंट मिली.

चीता यह कहते हुए वहां से चला, "अब मैं जंगल में सबसे सुन्दर लगने वाला चीता हूँ."

और जब छोटे बाबाजी कुछ और आगे गए तो उनकी मुलाकात एक और चीते से हुई, और उसने उनसे कहा, "छोटे बाबाजी, मैं तुम्हें खाने जा रहा हूं!" फिर छोटे बाबाजी ने कहा, "अरे! मिस्टर चीते, कृपया करके मुझे मत खाओ. मैं तुम्हें बैंगनी रंग के अपने खूबसूरत छोटे जूते दे दूंगा."
लेकिन टाइगर ने कहा, "तुम्हारे जूते मुझे किस काम आएंगे? मेरे चार पैर हैं, और तुम्हारे केवल दो ही हैं. तुम्हारे पास मेरे चार पैरों के लिए जूते तक नहीं हैं."
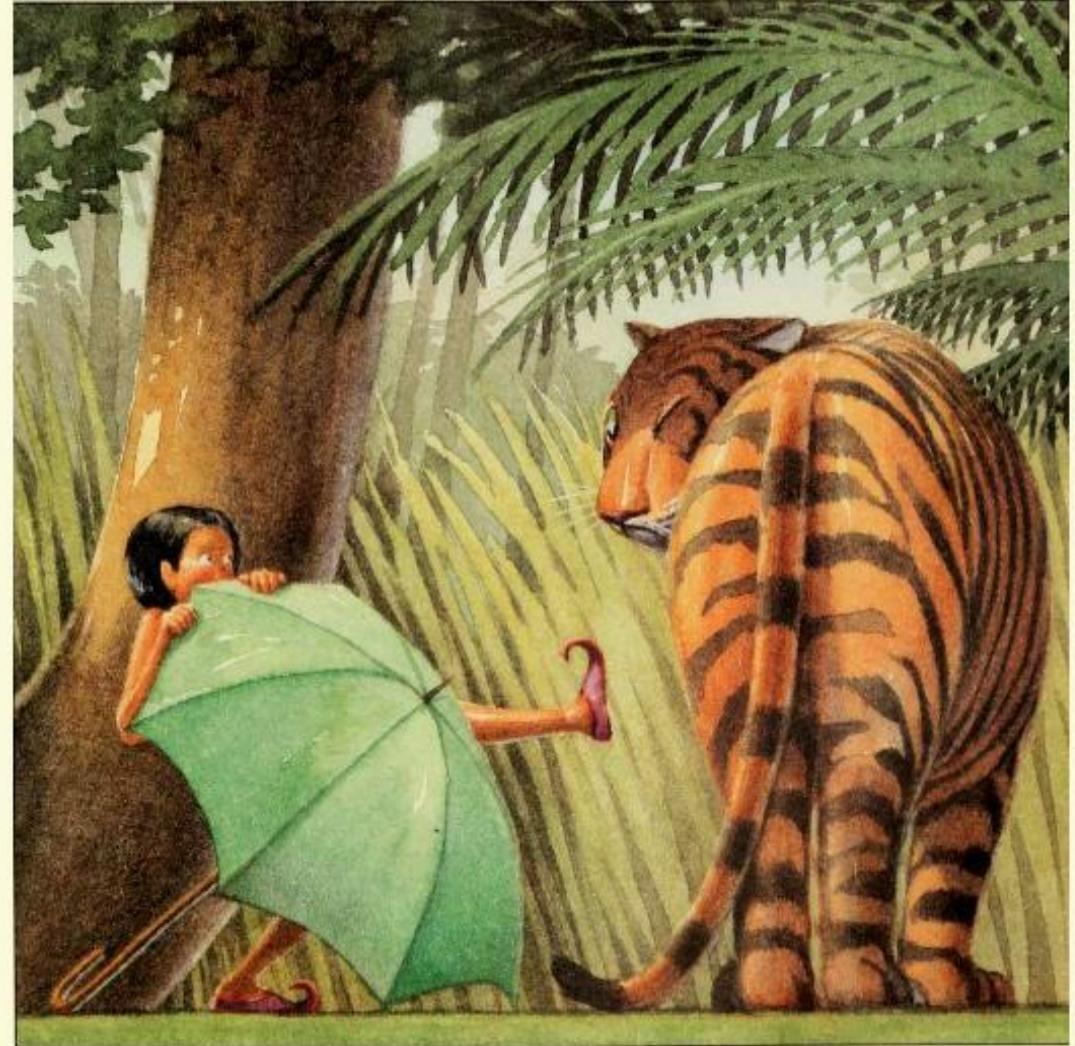
लेकिन छोटे बाबाजी ने कहा, "तुम उन्हें अपने दोनों कानों में पहन सकते हो."

"हाँ, यह तो मैं कर सकता हूँ," चीते ने कहा, "और यह एक बहुत अच्छा विचार है. चलो मुझे अपने जूते दे दो, और फिर इस बार मैं तुम्हें नहीं खाऊंगा."

फिर चीते को छोटे बाबजी के सुंदर छोटे बैंगनी जूते मिले, और वो यह कहते हुए वहां से गया, "देखो अब मैं जंगल में सबसे सुन्दर लगने वाला चीता हूं."

कुछ और आगे जाने के बाद छोटे बाबाजी ने एक अन्य चीते से मुलाकात हुई, और उसने उनसे यह कहा, "छोटे बाबाजी, मैं तुम्हें खाने जा रहा हूं!" तब छोटे बाबाजी ने कहा, "अरे! मिस्टर चीते, कृपया करके मुझे मत खाओ, मैं तुम्हें अपना सुंदर हरा छाता दे दूंगा." लेकिन टाइगर ने कहा, "मुझे चलने के लिए अपने सभी पंजे की जरूरत होगी फिर मैं तुम्हारा छाता कैसे पकडूँगा?" "तुम अपनी पूंछ में छाते को एक गाँठ से बाँध सकते हो," छोटे बाबाजी ने कहा. "हाँ, यह तो मैं कर सकता हूँ," चीते ने कहा. "चलो मुझे छाता दे दो, फिर मैं इस बार तुम्हें नहीं खाऊंगा."
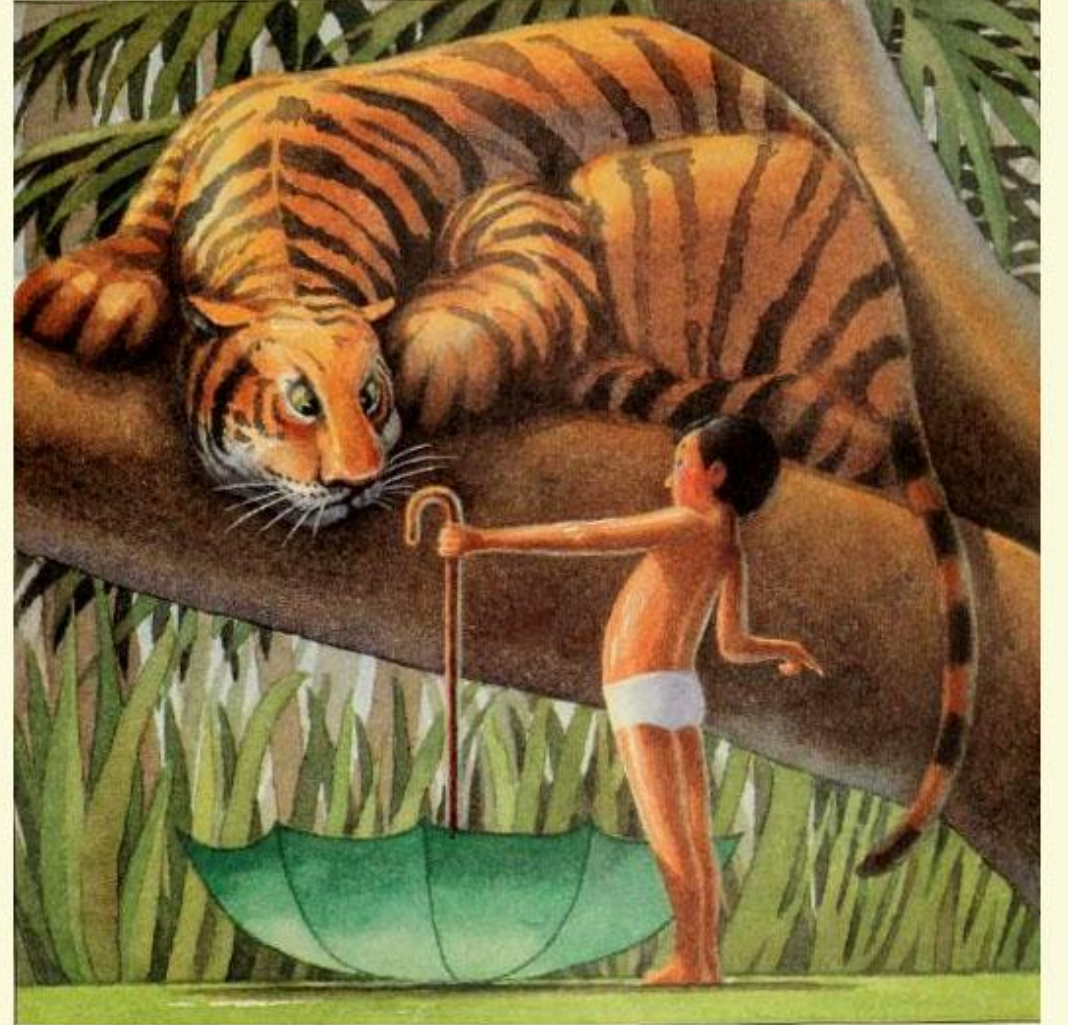
फिर वह छोटे बाबाजी का सुंदर हरा छाता लेकर यह कहते हुए चला गया, "अब मैं जंगल का सबसे सुन्दर बाघ हूँ."

अब बेचारे छोटे बाबाजी रोते हुए आगे चले, क्योंकि क्रूर चीते उसकी सारी बढ़िया चीज़ें ले गए थे.
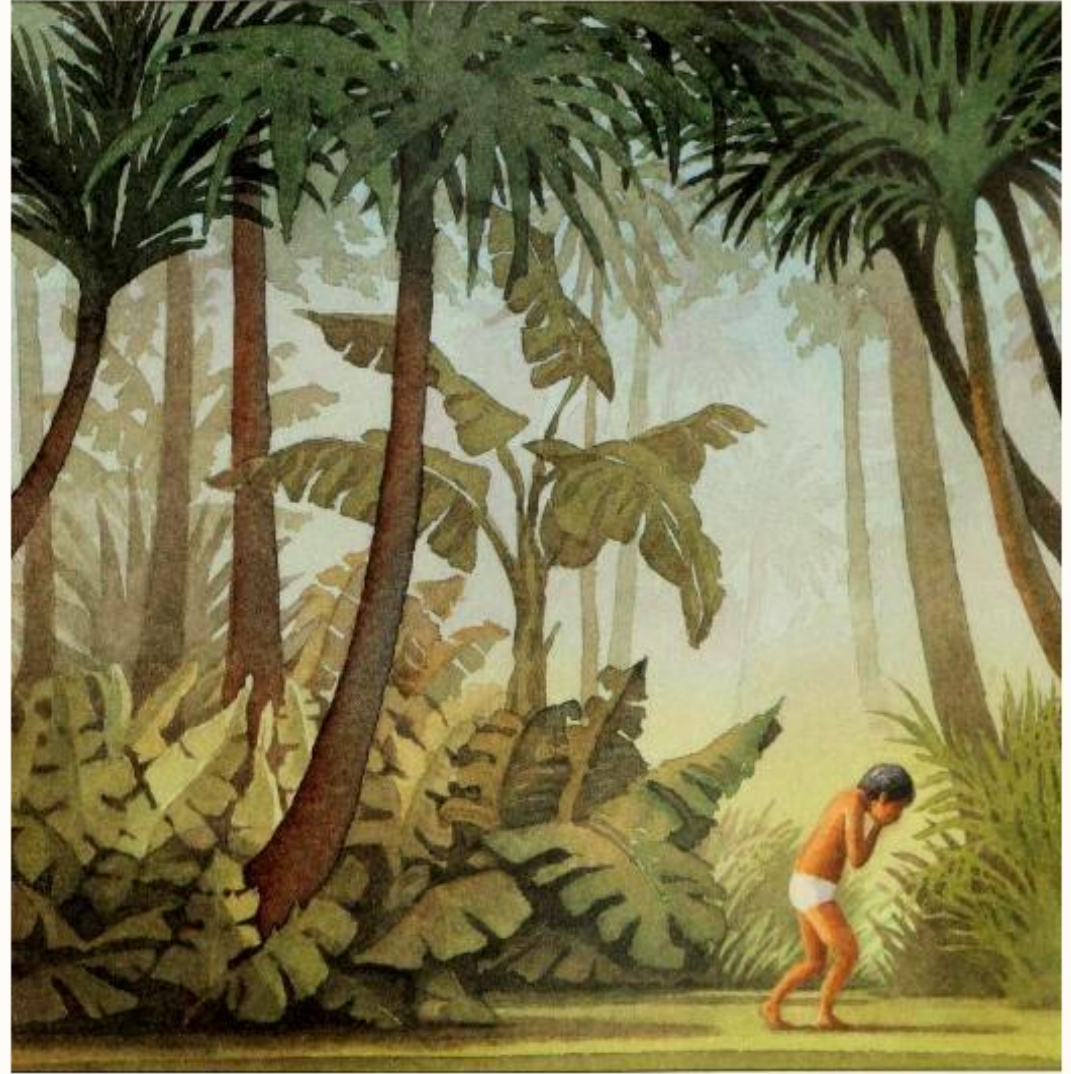
तभी बाबाजी को एक भयानक शोर सुनाई दिया, "गर्र गर्र गर्र गर्र गर्र गर्र ..." और फिर वो शोर और ज़ोर से होने लगा.

"अरे बाप रे!" छोटे बाबाजी ने कहा, "क्या वो सभी चीते मुझे खाने के लिए वापस आ रहे हैं! अब मैं क्या करूँ?" इसलिए वह जल्दी से एक ताड़ के पेड़ के पीछे जाकर छिप गया, और क्या मामला है यह देखने के लिए इधर-उधर झाँकने लगा.
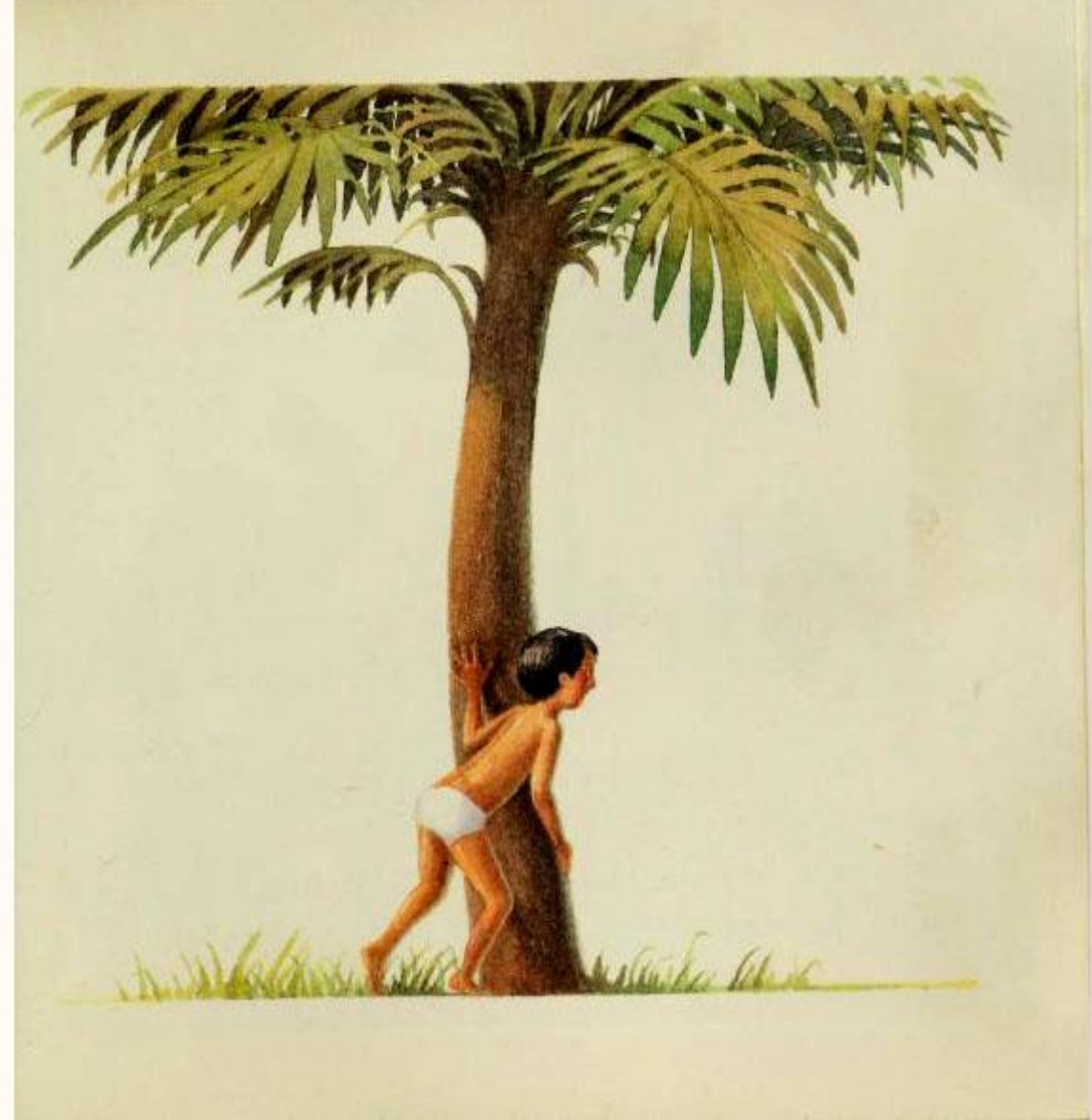
और वहाँ उसने सभी चीतों को आपस में लड़ते हुए देखा - वे इस बात को लेकर लड़ रहे थे कि उनमें से कौन सबसे सुन्दर लग रहा था.

और फिर वे सभी इतने गुस्से और ताव में आ गए कि उन्होंने उछलकर अपने सारे बढ़िया कपड़े उतार दिए, और फिर अपने पंजों से एक-दूसरे को नोंचने लगे और एक-दूसरे को अपने बड़े-बड़े सफ़ेद दांतों से काटने लगे.
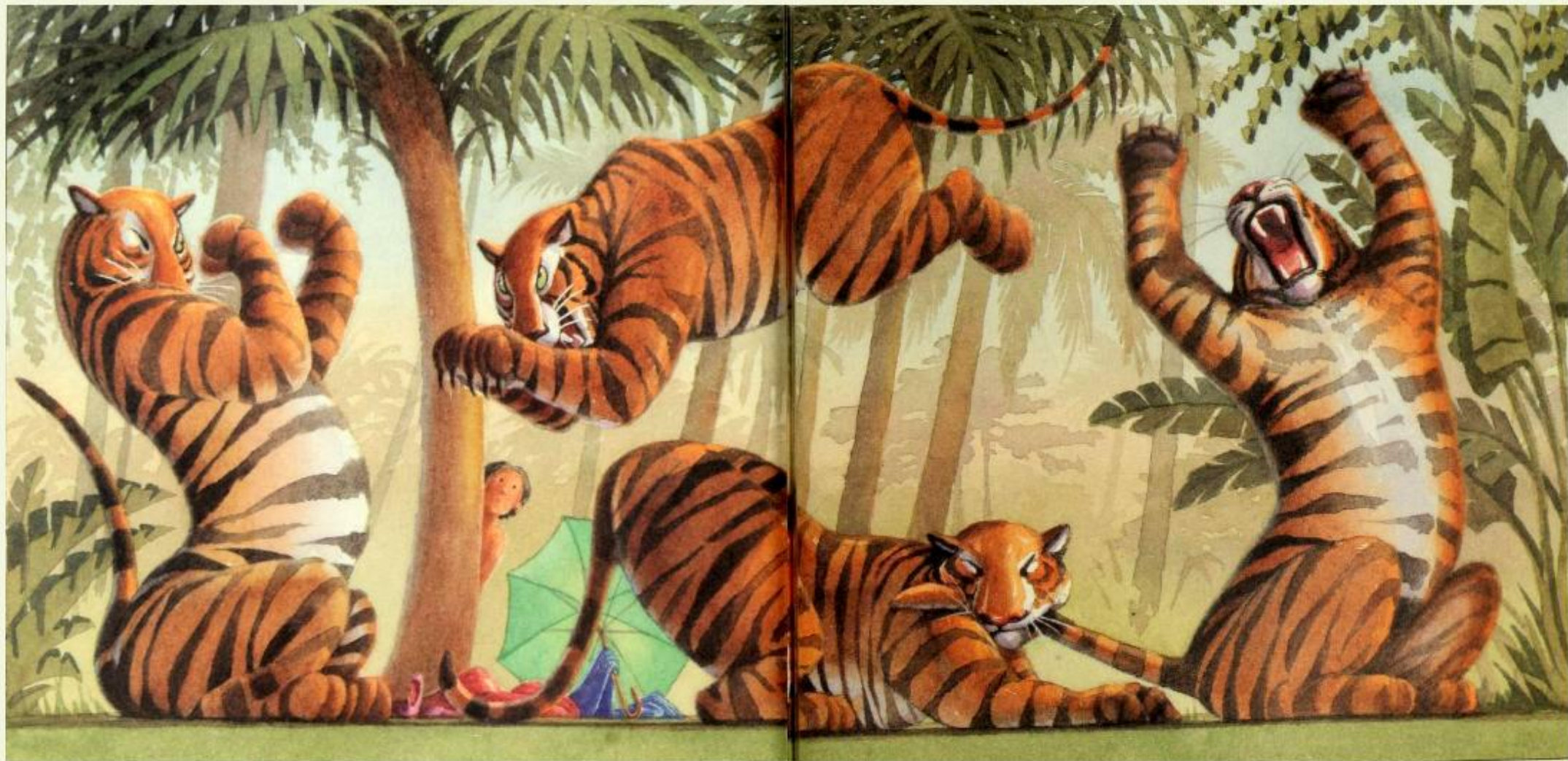
फिर वे लुढ़कते हुए उस पेड़ के नीचे आये जहाँ छोटा बाबाजी छिपा था, लेकिन वो जल्दी से छतरी के पीछे कूद गया. फिर चीतों ने एक-दूसरे की पूंछ पकड़ ली, वे लड़खड़ाए और हाथापाई करने लगे, और फिर उन्होंने खुद को पेड़ के चारों ओर एक गोले में घूमते हुए पाया.

फिर, जब चीते कुछ दूर थे, तब छोटे बाबाजी ने उछल कर उनसे कहा, "अरे चीतों! तुमने अपने सभी अच्छे कपड़े क्यों उतारे? क्या तुम उन्हें अब और नहीं चाहते हो?" लेकिन सभी चीतों ने केवल एक ही जवाब दिया, "गर्र गर्र गर्र गर्र गर्र!"
तब छोटे बाबाजी ने कहा, "अगर तुम उन्हें नहीं चाहते हो, तो फिर मैं उन्हें ले जाऊंगा." लेकिन चीतों ने एक-दूसरे की पूंछ को कसकर पकड़े रखा और छोड़ा नहीं, और इसलिए वे केवल "गर्र गर्र गर्र गर्र गर्र!" ही करते रहे.

और चीते अभी भी बहुत गुस्से में थे, और वे एक-दूसरे की पूंछ को छोड़ नहीं रहे थे.

और वे इतने गुस्से में थे कि वे पेड़ के चारों और परिक्रमा लगा रहे थे और एक दूसरे को खाने की कोशिश कर रहे थे, और उसके लिए वे तेजी और तेजी से भाग रहे थे.

फिर वे इतनी तेजी से चक्कर काटने लगे कि आप उनके पैर तक नहीं देख सकते थे. और फिर वे और अधिक तेजी और तेज़ी से भागने लगे.

अंत में वे सब पिघल गए, और वहां पिघले हुए मक्खन (उसे भारत में "घी," कहा जाता है) ही बचा. पेड़ के चारों ओर अब सिर्फ घी का एक गोला ही बचा था.
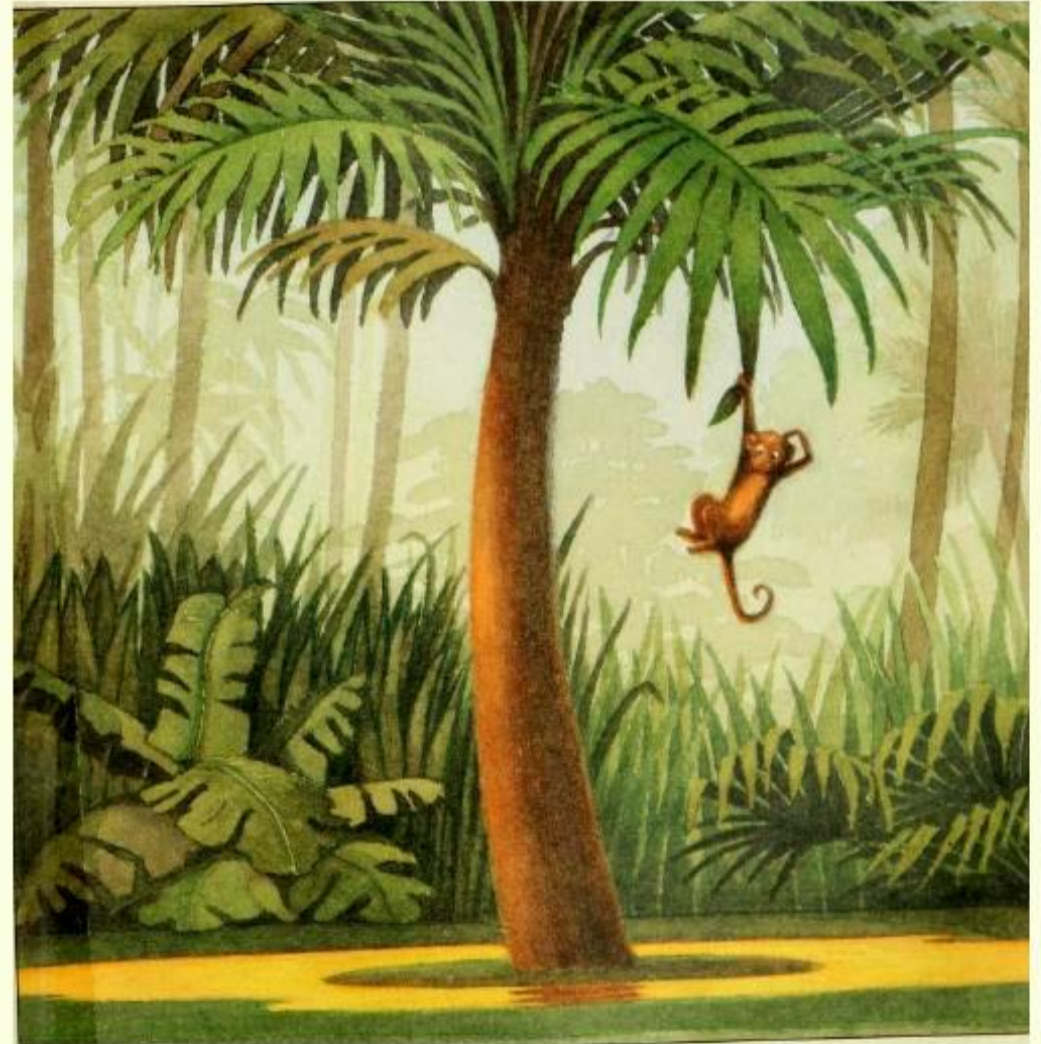
अब पापाजी अपने काम से घर लौट रहे थे. पीतल की एक बड़ी गगरी उनके हाथों में थी. और जब उन्होंने देखा कि सभी चीतों का क्या बचा, तो उन्होंने कहा, "अरे! यह कितना प्यारा पिघला हुआ मक्खन है! मैं उस घर ले जाकर मामाजी को दूंगा. वो उससे खाना बनाएंगी." इसलिए उन्होंने सब घी अपनी बड़ी पीतल की गगरी में डाला, और खाना पकाने के लिए उसे मामाजी के पास ले गए.

जब मामाजी ने पिघले हुए मक्खन को देखा, तो वो बेहद प्रसन्न नहीं हुईं! "आज," उन्होंन कहा, "हम सभी रात को माल-पूए खाएंगे!"

फिर मामाजी ने सत्ताईस माल-पूए खाए

और पापाजी ने पचपन खाये.

लेकिन छोटे बाबाजी ने एक सौ उनहत्तर माल-पूए खाये,
क्योंकि उसे बहुत भूख लगी थी.
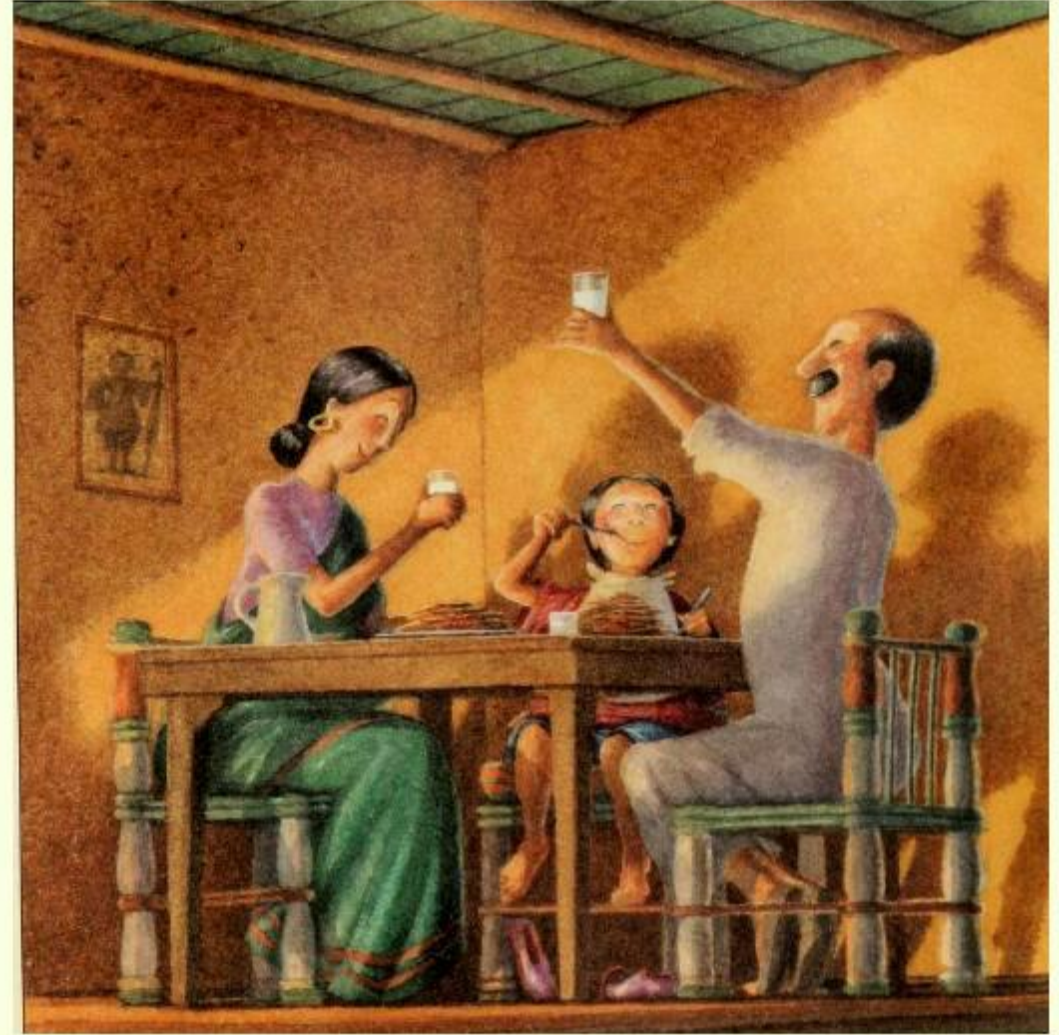
तीस साल तक भारत में रहने वाली हेलेन बैनरमैन ने सबसे पहले इस कहानी को "लिटिल ब्लैक सैम्बो" के नाम से (1899) में लिखा और चित्रित किया. यह कहानी निश्चित रूप से भारतीय कहानी है, जिसमें चीतों और "घी" (पिघले हुआ मक्खन) का ज़िक्र है. बैनरमैन की इस कहानी में छोटे लड़के, उसकी माँ और उसके पिताजी को सिर्फ प्रामाणिक भारतीय नाम दिए गए हैं.